ग्रन्थमाला ‘धर्म’ : खण्ड ४

दर्शन, स्मृति एवं पुराण

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 **सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या** 卐

मराठी ३४३, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९६, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला २९, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

नवम्बर २०२३ तक ३६४ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९४ लाख ६७ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

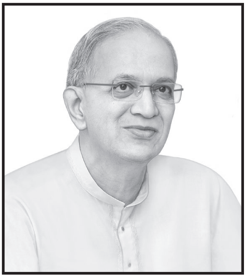

१. अध्यात्मप्रसारार्थ ‘सनातन संस्था’की स्थापना

२. शीघ्र ईश्‍वरप्राप्तिके लिए ‘गुरुकृपायोग’ साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २१.११.२०२३ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४७ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक ‘सनातन प्रभात’के संस्थापक-सम्पादक

५. हिन्दू राष्ट्रकी (ईश्‍वरीय राज्यकी) स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. ‘हिन्दू राष्ट्र’की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्‍वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१७.५.१९९८

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षण फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

डॉ. जयंत आठवलेजीकी 'सच्चिदानंद परब्रह्म' उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

'१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडीपट्टिका'के वाचनके माध्यमसे सप्तर्षियोंकी आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले' सम्बोधित किया जा रहा है । इससे पहले उन्हें ग्रन्थोंमें 'प.पू.' एवं 'परात्पर गुरु' की उपाधियोंसे सम्बोधित किया है । इसके अनुसार ग्रन्थके मुखपृष्ठपर एवं ग्रन्थमें वैसा उल्लेख किया है ।

सनातनकी दो सद्‌गुरुओंके नामोंसे पहले विशिष्ट आध्यात्मिक उपाधि लगानेका कारण

नाडीपट्टिका-वाचनद्वारा सप्तर्षियोंने की आज्ञाके अनुसार १३.५.२०२० से सद्‌गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजीको 'श्रीसत्‌शक्ति (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी' एवं सद्‌गुरु (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजीको 'श्रीचित्‌शक्ति (श्रीमती) अंजली मुकुल गाडगीळजी' सम्बोधित किया जा रहा है । ये सन्तद्वयी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उत्तराधिकारिणी हैं ।

टिप्पणी - ग्रन्थके कुछ सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्रोंमें दर्शाए गए विविध स्पन्दनोंके कारण मूल रेखाचित्र सुस्पष्ट दिखाई नहीं देता । ऐसा मूल रेखाचित्र भी सम्बन्धित सूक्ष्म ज्ञानसम्बन्धी चित्रसे पूर्व दिया गया है ।

विषयसूची

१. भूमिका ७

२. अध्याय १ : दर्शन ८

३. अध्याय २ : स्मृति (धर्मशास्त्र एवं धर्माचरण का विवरण) २५

४. अध्याय ३ : पुराण ७५

५. धर्मसम्बन्धी आलोचनाएं अथवा अनुचित विचार एवं उनका खण्डन ८५

संस्कृत भाषानुरूप हिन्दीके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन !

हिन्दीमें उर्दूकी भांति कुछ शब्दोंके नीचे बिन्दु (नुक्ता) लगाते हैं, उदा. हज़ार, जोड़, गाढ़ा । संस्कृत देवभाषा है । सनातन संस्था उसे आदर्श मानकर, ग्रन्थोंमें शब्दोंके नीचे बिन्दु नहीं लगाती तथा कारकचिन्हको धातुसे जोडती है । संस्कृत समान हिन्दीका प्रयोग करना अर्थात 'चैतन्यकी ओर अग्रसर होना' । प्रत्येक व्यक्ति इसका आचरण कर 'स्वभाषा' रक्षार्थ अर्थात धर्मरक्षाके कार्यमें सहभागी होकर अपना धर्मकर्तव्य निभाए ! **– (परात्पर गुरु) डॉ. आठवले**

सनातनके ग्रन्थोंमें उपयोग की गई संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषाकी कारणमीमांसा

१. सनातनके ग्रन्थोंमें शुद्ध (संस्कृतनिष्ठ) हिन्दीका उपयोग किया जाता है। पाठकोंकी सुविधाके लिए कठिन शब्दोंके आगे कोष्ठकमें वैकल्पिक अन्य भाषाके शब्दका उल्लेख किया जाता है।

२. हिन्दी राष्ट्रभाषा होनेके कारण विविध प्रान्तोंमें एक ही अर्थमें एक से अधिक शब्द प्रचलित होते हैं। अनेक बार शब्दकी वर्तनीमें अंतर होता है। इन कारणोंसे पाठकोंको भाषा कठिन अथवा अशुद्ध प्रतीत न हो, इस हेतु ग्रन्थमें विभिन्न स्थानोंपर हमने कोष्ठकमें वैकल्पिक शब्द देनेका प्रयास किया है; तथापि पृष्ठसंख्या बढनेके भयसे प्रत्येक बार ऐसा करना सम्भव नहीं।

– (परात्पर गुरु) डॉ. जयंत आठवले

भूमिका

सिकंदरने, हिन्दुस्थानपर चढाई करनेके लिए प्रस्थान करते समय, ग्रीक दार्शनिक अरिस्टॉटलसे पूछा, ‘‘युद्धके पश्चात लौटते समय मैं आपके लिए कौन-सी बहुमूल्य वस्तु लाऊं ?’ इसपर वे बोले, ‘मुझे केवल गंगाजल चाहिए और जिसने हिन्दुस्थानको इतना वैभव प्राप्त करा दिया, वे तत्त्वज्ञानसम्बन्धी ग्रन्थ चाहिए !’ अनेक पश्चिमी विद्वानोंने हिन्दू धर्मग्रन्थोंका गुणगान किया है । इससे भी हिन्दू धर्मग्रन्थोंकी महत्ता ज्ञात होती है । धर्मग्रन्थोंकी महत्ता ज्ञात होनेपर धर्मग्रन्थोंपर और इनके माध्यमसे धर्मपर श्रद्धा दृढ होती है ।

ईश्वरप्राप्तिकी अनुभूति कराना, धर्मका अन्तिम साध्य है । यह अनुभूति होनेके लिए आत्मा-जगत्-ईश्वर इत्यादि सम्बन्धी तात्त्विक विचारोंका ज्ञान होनेके साथ-साथ धर्मनियमोंके अनुसार आचार-विचार, कर्तव्यकर्म आदि धर्माचरण सम्बन्धी ज्ञान पहलेसे होना आवश्यक होता है । धर्मग्रन्थोंसे इन दोनों बातोंका ज्ञान होता है ।

उपर्युक्त उद्देश्य ध्यानमें रखकर इस ग्रन्थमें दर्शन, स्मृति और पुराण, इन हिन्दुओंके प्रमुख प्रमाणभूत धर्मग्रन्थोंके विविध अंगों-उपांगों का विस्तृत विवेचन किया गया है । ‘धर्म का निश्चित अर्थ क्या है’, यह समझनेके लिए इस विषयका सैद्धान्तिक विवेचन, ‘धर्म’ नामक ग्रन्थमें किया गया है ।

‘प्रस्तुत ग्रन्थ पढकर अधिकाधिक लोग धर्मपरायण बनकर ईश्वरप्राप्ति के पथपर आगे बढें’, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ! – **संकलनकर्ता**

गीताका परिचय करानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

गीताज्ञानदर्शन

प्रस्तुत ग्रन्थमें महान धर्मग्रन्थ ‘श्रीमद्भगवद्गीता’ के प्रत्येक अध्यायमें वर्णित तत्त्वज्ञान, साधना तथा उसका फल बताया है । आवश्यक स्थानपर सुगम विवेचन भी किया है। इससे प्रायः कठिन लगनेवाली गीता समझना सरल हो गया है !

अध्याय १

दर्शन

अनुक्रमणिका

१.	व्युत्पत्ति एवं अर्थ	९
२.	विषय	१०
	२ अ. लौकिक दृष्टि	१०
	२ आ. लोकान्तर दृष्टि	१०
	२ इ. लोकोत्तर दृष्टि	१०
३.	उद्देश्य एवं महत्त्व	११
४.	सिद्धान्त (प्रमुख दर्शन एवं अन्य दर्शन)	११
५.	विशेषताएं	१२
	५ अ. तर्कका आधार ५ आ. सदेह मुक्तिका मार्ग	१२
६.	संख्या	१३
७.	इतिहास (वैदिक काल, वेदोत्तर काल, सूत्रकाल व भाष्यकाल)	१४
८.	प्रकार	१५
	८ अ. आस्तिक एवं नास्तिक दर्शन	१५
	८ आ. वैदिक (आस्तिक) दर्शन (न्याय, वैशेषिक इत्यादी)	१६
	८ इ. वेदानुकूल (आगमिक) दर्शन	२०
	८ ई. अवैदिक (नास्तिक) दर्शन (बौद्ध, जैन एवं चार्वाक दर्शन)	२१
९.	साधना (श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन)	२३

अध्याय २

स्मृति (धर्मशास्त्र एवं धर्माचरण का विवरण)

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेष सूत्र '✻' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।)

१. अर्थ	२. धर्मशास्त्र	२६
३. विषय	४. आवश्यकता	२७
५. महत्त्व	६. विशेषताएं	३१
७. संख्या	८. स्मृतियोंमें भिन्नता	३२
९. महत्त्वपूर्ण स्मृतियां		३३
१०. प्रमाण (युग एवं स्मृतिप्रमाण)		३३
११. वेद (श्रुति) एवं स्मृति	१२. धर्मशास्त्र एवं योग	३४
१३. स्मृतिग्रन्थ		३५
✻ मनुस्मृति ✻ याज्ञवल्क्यस्मृति	✻ रामायण	३६
✻ योगवासिष्ठ ✻ महाभारत	✻ भगवद्गीता	३९
✻ भागवतपुराण ✻ प्रस्थानत्रयी		५१
१४. ग्रन्थकार		५७
✻ महर्षि वेदव्यास ✻ वैशंपायन एवं याज्ञवल्क्य		५७
✻ यास्काचार्य ✻ सायणाचार्य	✻ अन्य भाष्यकार	६२
✻ जगद्गुरु श्री शंकराचार्य		६३
✻ मठस्थापना ✻ महानुशासन	✻ समाज एवं आचार्य	६४
✻ तत्त्वज्ञान ✻ विशेषताएं	✻ आचार्यकी ग्रन्थसंपदा	६८

अध्याय ३

पुराण

अनुक्रमणिका

१. अर्थ — ७६

२. महत्त्व एवं विशेषताएं — ७६

३. विषय — ७८

- ३ अ. सर्ग — ७८
- ३ आ. प्रतिसर्ग अथवा प्रलय — ७८
  - ३ आ १. नैमित्तिक प्रलय — ७८
  - ३ आ २. प्राकृत प्रलय — ७८
  - ३ आ ३. आत्यन्तिक प्रलय — ७९
  - ३ आ ४. नित्य प्रलय — ७९
- ३ इ. मन्वन्तर — ७९
- ३ ई एवं ३ उ. वंश और वंशानुचरित — ७९

४. सीख — ८०

५. त्रिगुणोंके अनुसार प्रकार – सात्त्विक, राजसिक, तामसिक — ८०

६. महत्त्वपूर्ण पुराण (महापुराण) — ८०

७. मर्यादा — ८१

८. उपपुराण — ८३